बाल मृत्यु दर में गिरावट और कुपोषण की अदृश्य चुनौती - एक विश्लेषण

UPSC प्रासंगिकता - प्रारम्भिक परीक्षा: जनसांख्यिकी, गरीबी और समावेशन, अंतर्राष्ट्रीय रिपोर्ट और सूचकांक, स्वास्थ्य और बीमारियाँ, समसामयिक घटनाएँ

मुख्य परीक्षा - GS पेपर I: भारतीय समाज; GS पेपर II: स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधनों से संबंधित सामाजिक क्षेत्र, गरीबी और भूख से संबंधित मुद्दे, सरकारी नीतियाँ; GS पेपर III: भारत में खाद्य सुरक्षा, समावेशी विकास और इससे उत्पन्न विषय

IAS-PCS Institute

चर्चा में क्यों?

हाल ही में संयुक्त राष्ट्र (UN) और 'यूनिटेड नेशंस इंटर-एजेंसी ग्रुप फॉर चाइल्ड मॉर्टलिटी एस्टिमेशन' (UNIGME) द्वारा "बाल मृत्यु दर में स्तर और रुझान" रिपोर्ट 2025 जारी की गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 में वैश्विक स्तर पर 49 लाख बच्चों की मृत्यु हुई, जिनमें से आधी मौतें नवजात काल (जन्म के पहले 28 दिन) में हुईं। भारत के संदर्भ में यह रिपोर्ट सुखद संकेत देती है, कि देश ने नवजात और बाल मृत्यु दर को कम करने में ऐतिहासिक प्रगति की है।

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

पृष्ठभूमि:

- ऐतिहासिक रूप से, बाल मृत्यु दर विकासशील देशों के लिए एक गंभीर मानवीय संकट रही है।
- वर्ष 2000 के बाद से वैश्विक स्तर पर बाल मृत्यु दर में 50% से अधिक की गिरावट आई है, लेकिन 2015 के बाद से इस गिरावट की वार्षिक दर में 60% की कमी आई है, जो 'सतत विकास लक्ष्यों' की प्राप्ति की दिशा में एक बड़ी बाधा है।
- भारत, जो कभी उच्च बाल मृत्यु दर वाला देश था, अब दक्षिण एशिया में इस दर को कम करने में एक 'पिवोटल रोल' (निर्णायक भूमिका) निभा रहा है।

संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदु:

1. भारत की ऐतिहासिक प्रगति

भारत ने पिछले तीन दशकों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार किया है:

- **नवजात मृत्यु दर (NMR):** 1990 में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 57 होने वाली मौतें, 2024 में घटकर 17 रह गई हैं।

- **5 वर्ष से कम उम्र की मृत्यु दर (U5MR):** 1990 के 127 के स्तर से गिरकर 2024 में यह 27 पर आ गई है।
- **गिरावट की दर:** भारत ने U5MR में 78% और NMR में 70% की गिरावट दर्ज की है, जो वैश्विक औसत (क्रमशः 61% और 54%) से काफी बेहतर है।
- **कारण:** स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, यह सफलता संस्थागत प्रसव, 'मिशन इंद्रधनुष' जैसे टीकाकरण अभियानों और लक्षित स्वास्थ्य हस्तक्षेपों का परिणाम है।

2. गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM): एक 'अदृश्य' हत्यारा

रिपोर्ट में पहली बार गंभीर तीव्र कुपोषण के कारण होने वाली प्रत्यक्ष मौतों का डेटा शामिल किया गया है।

- **प्रत्यक्ष प्रभाव:** 2024 में लगभग 1 लाख बच्चों की मृत्यु सीधे कुपोषण के कारण हुई।
- **अप्रत्यक्ष प्रभाव:** कुपोषण बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को इतना कमजोर कर देता है कि वे मलेरिया या निमोनिया जैसी सामान्य बीमारियों से भी नहीं लड़ पाते।
- रिपोर्ट चेतावनी देती है कि आधिकारिक आँकड़े कुपोषण के वास्तविक बोझ को कम करके आँकते हैं, क्योंकि इसे अक्सर मृत्यु के 'अंतर्निहित कारण' के रूप में दर्ज नहीं किया जाता है।

3. नवजात मृत्यु (NM) का उच्च अनुपात

कुल बाल मौतों में लगभग आधा हिस्सा (23 लाख) नवजात शिशुओं का है।

- **प्रमुख कारण:** समय से पहले जन्म (Preterm birth - 36%) और प्रसव के दौरान होने वाली जटिलताएं (Labour complications - 21%)। यह दर्शाता है कि प्रसव के दौरान और उसके तुरंत बाद की देखभाल अभी भी सुधार की मांग करती है।

4. आयु वर्ग 5-24: नई चुनौतियाँ

रिपोर्ट में किशोरों और युवाओं (5-24 वर्ष) की मृत्यु के कारणों में बदलाव देखा गया है:

- **लिंग-आधारित कारण:** 15-19 वर्ष की लड़कियों में 'आत्म-क्षति' और लड़कों में 'सड़क दुर्घटनाएं' मृत्यु के अग्रणी कारण बनकर उभरे हैं। यह मानसिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा के मुद्दों को बाल स्वास्थ्य चर्चा के केंद्र में लाता है।

5. क्षेत्रीय असमानता

बाल मृत्यु दर का बोझ दुनिया के कुछ हिस्सों में अत्यधिक केंद्रित है।

- **उप-सहारा अफ्रीका:** यहाँ वैश्विक बाल मौतों का 58% हिस्सा दर्ज किया गया। मलेरिया इस क्षेत्र में बच्चों का सबसे बड़ा हत्यारा बना हुआ है।

IAS-PCS Institu
Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

- **संकटग्रस्त देश:** पाकिस्तान, सोमालिया और सूडान जैसे देशों में कुपोषण से होने वाली मौतों की सं ख्या सर्वाधिक है।

वर्तमान चुनौतियां और 'गैप'

प्रगति के बावजूद, 2026 में भी कुछ गंभीर चिताएं बनी हुई हैं:

- **क्षेत्रीय असमानता:** केरल (NMR: 4-5) जैसे राज्य वैश्विक मानकों के करीब हैं, जबकि उत्तर प्रदेश (≈38), बिहार (≈31), और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में यह दर अभी भी राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है।
- **कुपोषण का बोझ:** रिपोर्ट दिखाती है कि गंभीर तीव्र कुपोषण अभी भी 5% प्रत्यक्ष मौतों का कारण है। अप्रत्यक्ष रूप से, यह बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम कर रहा है।
- **नवजात मौतों का उच्च अनुपात:** कुल बाल मौतों में से लगभग 47-50% मौतें अभी भी जन्म के पहले 28 दिनों में हो रही हैं, जो प्रसवोत्तर देखभाल में सुधार की आवश्यकता बताती हैं।

SDG 2030 के प्रति प्रतिबद्धता

भारत का लक्ष्य 2030 तक निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त करना है:

- NMR: ≤ 12 (प्रति 1,000 जीवित जन्म)
- U5MR: ≤ 25 (प्रति 1,000 जीवित जन्म)

वर्तमान गति को देखते हुए, भारत इन लक्ष्यों को समय से पहले या समय पर प्राप्त करने की मजबूत स्थिति में है।

यूपीएससी के दृष्टिकोण से इस रिपोर्ट से संबंधित प्रमुख बिंदु:

- **सतत विकास लक्ष्य (SDG):** यह रिपोर्ट सीधे तौर पर SDG 3.2 से संबंधित है, जिसका लक्ष्य 2030 तक नवजात शिशु मृत्यु दर को प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 12 से कम और 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर को प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 25 से कम करना है। भारत की वर्तमान प्रगति इस लक्ष्य के काफी करीब है।
- **गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM) और स्वास्थ्य:** रिपोर्ट में पहली बार कुपोषण से होने वाली प्रत्यक्ष मौतों का डेटा दिया गया है, जो दर्शाता है कि कुपोषण न केवल एक पोषण संबंधी समस्या है, बल्कि यह बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर अन्य बीमारियों से मृत्यु का जोखिम बढ़ा देता है।
- **भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल:** भारत में मृत्यु दर में आई इस भारी गिरावट का मुख्य श्रेय 'जननी सुरक्षा योजना' (JSY), 'मिशन इंद्रधनुष' (पूर्ण टीकाकरण) और 'पोषण अभियान' जैसी लक्षित योजनाओं को जाता है। यह सरकारी नीतियों के सफल कार्यान्वयन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसे उत्तर लेखन में केस स्टडी के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- **क्षेत्रीय और जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ:** रिपोर्ट 5-24 वर्ष के आयु वर्ग में 'आत्म-क्षति' और सड़क दुर्घटनाओं को मृत्यु का प्रमुख कारण बताती है। यह 'किशारोन्मुख स्वास्थ्य' और मानसिक स्वास्थ्य नीति पर

ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जो अब तक बाल स्वास्थ्य चर्चाओं में हाशिये पर थे।

निष्कर्ष और आगे की राह:

UN की यह रिपोर्ट सिद्ध करती है कि अधिकांश बाल मौतें "निवारणीय (Preventable)" थीं। भारत की प्रगति सराहनीय है, लेकिन 2028 और उसके बाद के लक्ष्यों के लिए अब 'बुनियादी ढांचा निर्माण' से आगे बढ़कर 'गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा' और 'पोषण सुरक्षा' पर ध्यान केंद्रित करना होगा। किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य और कुपोषण के अदृश्य आंकड़ों को संबोधित करना ही भविष्य की सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों का मुख्य आधार होना चाहिए।

(स्रोत: द हिन्दू)

यूपीएससी प्रारम्भिक परीक्षा अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1: "बाल मृत्यु दर में स्तर और रुझान" रिपोर्ट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वर्ष 2000 के बाद से वैश्विक स्तर पर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर में आधे से अधिक की गिरावट आई है।
2. रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2015 के बाद से बाल मृत्यु दर में गिरावट की वार्षिक गति में उल्लेखनीय रूप से तेजी आई है।
3. गंभीर तीव्र कुपोषण को पहली बार बच्चों की मृत्यु के प्रत्यक्ष कारण के रूप में आँकड़ों में शामिल किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)

प्रश्न 2. भारत में बाल मृत्यु दर की वर्तमान स्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत ने 1990 की तुलना में नवजात मृत्यु दर में 70% से अधिक की गिरावट दर्ज की है।
2. वर्तमान में भारत की पाँच वर्ष से कम उम्र की मृत्यु दर 'सतत विकास लक्ष्य' के निर्धारित मानक को प्राप्त कर चुकी है।
3. भारत के सभी राज्यों ने 2026 तक नवजात मृत्यु दर को एकल अंक में लाने का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) केवल 1 और 2
(d) केवल 2 और 3

उत्तर: (a)

IAS-PCS Institute

यूपीएससी मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न: "गंभीर तीव्र कुपोषण (SAM) न केवल बाल मृत्यु का एक प्रत्यक्ष कारण है, बल्कि यह संक्रामक रोगों के विरुद्ध बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर 'अदृश्य मृत्यु दर' को बढ़ावा देता है।" UNIGME की हालिया रिपोर्ट के संदर्भ में चर्चा कीजिए। **(शब्द सीमा: 150)**

Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806